International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 130-132

बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व विकास में प्राथमिक शिक्षकों का योगदान

नीतू कुमारी*
डॉ पूजा बेनीवाल**

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों का बहुत अधिक योगदान होता है। क्योंकि वह बालकों की प्रारंभिक शिक्षा होती है। अर्थात शिक्षा की नींव या आधारशिला होती है। जिसका मजबूत होना अति आवश्यक है। इसके साथ ही इस स्तर पर बालकों के जीवन में शिक्षकों के व्यक्तित्व का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि इस समय बालक शिक्षकों को अपने आदर्श के रूप में देखता है। इसलिए शिक्षक के व्यक्तित्व के सभी गुण समायोजन, नैतिकता, चारित्रिक, सामाजिक, नैतिक मूल्य इत्यादि बालकों के व्यक्तिगत गुणों को प्रभावित करता है। प्राथमिक शिक्षा की है जो बालक को उचित मार्गदर्शन प्रदान करता है जो उसका भविष्य निर्धारित करता है। इस स्तर का शिक्षक ही है जो बालकों में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है ताकि हर जगह वह अपनी बात आसानी से सहजता आत्मविश्वास के साथ रख सके। इसके अतिरिक्त शिक्षक बालकों में रूचि एवं मूल्य प्रवृतियों का विकास भी करता है और उन्ही के अनुसार शिक्षण कार्य करवाता है।

समायोजन एक प्रक्रिया होती है जिसमें व्यक्ति अपने विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति एवं पूर्ति करने वाली स्थितियों से सामंजस्य व संतुलन स्थापित करता है। जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो वह अपने आप परिस्थिति और वातावरण से समायोजन कर लेता है। अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों के अपने अनुकूल बनाना या स्वयं ही परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायेजन है। यह समायोजन व्यक्ति की अपनी क्षमता व योग्यता से प्रभावित होता है। समायोजन मानव जीवन में जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें मनुष्य अपने वातावरण के साथ समायोजित होकर अधिगम प्राप्त करता है। समायोजन की उत्पत्ति आवश्यकता से होती है तथा आवश्यकता पूर्ति होने पर समायेाजन स्थापित हो जाता है। गेटस के अनुसार समायोजित व्यक्ति वह है जिसके आवश्यकता एवं तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित हो। क्योंकि प्राथमिक स्तर पर अनुसारण द्वारा अधिक सीखते है

अतः अध्यापक के द्वारा जो व्यवहार किया जाता है वहीं बालकों द्वारा दोहराया जाता है।

अतः शिक्षक को व्यवहार आदर्श रूप में रखना चाहिए तथा शिक्षकों को उचित व आदर्श मूल्यों का पालन करना चाहिए जिससे बालक भी उनका अनुसरण करें उनमें उचित मूल्यों का विकास हो सके इसके साथ ही शिक्षक में समायोजन का गुण भी होना चाहिए क्योंकि प्राथमिक स्तर पर बालक बहुत कम उम्र के होते है उन्हें समझना वह किसी कार्य के लिए तैयार करना बहुत मुश्किल या कठिन होता है। अतः शिक्षक को उन्हें के अनुसार सभी कार्य करने चाहिए तथा उनके अनुसार समायोजित हो जाना चाहिए। एक शिक्षक बालकों को तभी मार्गदर्शन में अधिगम करा सकता है जब वह स्वयं पूर्ण रूप से समायोजित हो तथा उसके व्यक्तिगत मूल्य भी उच्च कोटी के हो। शिक्षा ही एक ऐसा साधान है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। इसी सम्बन्ध में प्रमुख शिक्षा शास्त्री

* शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

फ्रेडरिक ट्रेसी ने कहा है कि सम्पूर्ण शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व के आदर्श की पूर्ण प्राप्ति है। यह आदर्श संतुलित व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व के सर्वागींण विकास से हमार तात्पर्य उसके मूल्यों से ही होता है। यह मूल्य सामाजिक जीवन प्रणाली से निकले हुए कुछ व्यवहार व मानक होते है जो व्यक्ति और समाज के बीच के व्यवहार और समायोजन को ध्यान में रखते हुए कुछ विश्वास और धारणाओं से बनते है। यह मूल्य स्थाई नहीं होते वरन परिवर्तनशील व विकासशील होते है जो व्यक्ति के जीवन दर्शन का निर्माण करते है। मनुष्य इच्छाओं और आकांक्षाओं को नियंत्रित करने का श्रेष्ठ साधन मूल्य ही है। मूल्य व्यक्ति समूह को भौतिक एवं सामाजिक रूप से समायोजित करने का साधन होते है।

अध्यापक का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है इसलिए यह आवश्यक है कि अध्यापक समायोजित हो और उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो। शिक्षण एक मानव प्रक्रिया है। शिक्षक का व्यक्तित्व एक शक्तिशाली घटक होता है। जो विद्यार्थियों की सीखने की आदतों एवं व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। विद्यार्थी उन सभी अध्यापकों को याद रखते है या सम्मान की दृष्टि से देखते है जो उनकी भावनाओं की कद्र करते है तथा उनकी रूचि को प्रोत्साहित करते है। शिक्षक के शब्द व्यवहार व अभिव्यक्ति विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन में उसके जीवन शैली व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है। तथा यह शब्द व्यवहार, अभिव्यक्ति का सकारात्मक होना अति आवश्यक है जो अध्यापक के समायोजित होने पर ही हो सकता है। शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण जो की विद्यार्थियों की योग्यता के सम्बन्ध में होते है। वह उनकी कार्य निष्पादन पर प्रभाव डालते है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी अपने माता–पिता व परिवार के बाद अध्यापक को ही सर्वोपरि समझते है तथा उन्हें अपना आदर्श मानते है अध्यापक का प्रभाव उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व व मूल्यों पर पड़ता है।

परिवार के बाद बालक यदि किसी से सर्वाधिक प्रभावित होता है तो वह शिक्षक होता है। एक अध्यापक और सम्पूर्ण व्यक्तित्व बालक को शैक्षिक व व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करता है। एक शिक्षक ही है जो बालकों में व्यवहार के लिए सामान्य नियमों का विवेक पूर्ण निर्धारण करने की योग्यता विकसित कर सकता है। अध्यापक ही बालकों में नैतिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता उत्पन्न कर सकता है। अपने जीवन तथा अपने हित से सम्बन्धित नियमों का तार्किक विवेचन करने की योग्यता भी शिक्षक ही एक बालक में विकसित कर सकता है। किसी भी प्रकार की परिस्थिति से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों को समझने की योग्यता का विकास भी शिक्षक करता है अतः शिक्षक का कर्तव्य है कि विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण करें। बालक का चरित्र निर्माण के लिए स्वयं अध्यापक का चरित्र आदर्श रूप में होना चाहिए। केवल उपदेश से ही कार्य सिद्ध नहीं होता वरन आदर्श उदाहरण और व्यवहारिक ज्ञान द्वारा सरलता से होता है। अतः बालक में मूल्यों की विकास के लिए अध्यापक में स्वयं में उत्तम व्यक्तिगत मूल्यों का होना अति आवश्यक है। वास्तम में मूल्यों की शिक्षा का बीजारोपण बालक की प्राथमिक अवस्था मे ही होना चाहिए और यह नियमित रूप से ही दी जानी चाहिए। बालकों में मूल्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्राथमिक अध्यापकों का ही होता है क्योंकि बालकों में प्राथमिक स्तर पर ही मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। यदि प्राथमिक स्तर पर ही बालक में मूल्य का प्रारंभ कर दिया जए तो वृद्धि व परिपक्वता के साथ–साथ बालक में मूल्य स्वतः ही उत्पन्न होते जाते है।

शिक्षकों का कर्तव्य है कि बालकों के पूर्ण विकास हेतु विद्यालय के बाहर और भीतर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से मूल्यों के सतत् विकास निर्माण हेतु उक्त परिवेश का सृजन करें। विद्यालय में होने वाली दैनिक दिनचर्या में गतिविधियों द्वारा भी बालकों का विस्तार होता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक हमेशा ही उच्च आदर्शो व मूल्यों से युक्त आचरण व व्यवहार करें।

मूल्यों के विकास में अध्यापकों का अत्यंत महानीय योगदान है वे अपने कृत्यों, आचरण, व्यवहार, मूल्यों के अभ्युदय एवं विद्यार्थियों में उसका बीजारोपण का कार्य कर सकते है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री हुमांयु कबीर ने मूल्यों व बालकों के विकास हेतु अध्यापकों का आह्वान करते हुए लिखा है कि "भारत में शिक्षक का यह विशेष अधिकार और कर्तव्य है कि वह समस्त विश्व के लिए नई सभ्यता के संश्लेषण और विकास हेतु इस नए प्रयत्न में मुख्य अभीकर्ताओं में सम्मिलित होकर कार्य करें।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हकीम एम ए एवं अस्थाना विपिन मनोविज्ञान शोध विधियाँ विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 993
2. भार्गव महेश आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन एचपी भार्गव बुक हाउस, आगरा.
3. सिंह, अरूण कुमार , उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास बेंगलुरू रोड़ दिल्ली, 2002.
4. सिंह अरूण कुमार एवं सिंह आशीष कुमार व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास बेंगलुरू रोड़ दिल्ली. 2002
5. सुलेमान, मोहम्मद एवं चौधरी, विनय कुमार "आधुनिक औद्योगिकी एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान", मोतिलाल बनारसीदास बेंगलुरू रोड़ दिल्ली. 2002
6. पांडे रामशक्ल शिक्षा मनोविज्ञान आर लाल बुक डिपो मेरठ, 2008.
7. सारस्वत, मालती शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन लखनऊ 2007.
8. चौधरी, अजय कुमार एवं पूरी, प्रेरणा एवं शर्मा, तरूण कुमार एवं जोशी हेमलता "मनोविज्ञान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर".
9. कुमार मुनि, धर्मेश, व्यक्तित्व विकास जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनू, राजस्थान 2013
10. मंगल एस के एवं मंगल शुभा व्यवहारिक विज्ञान में अनुसंधान विधियाँ, चै.प लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड दिल्ली 2014.
11. शर्मा, ममता एमएमसी है आरती सामान्य मनोविज्ञान पुस्तक के खंड 3 विकासातमक प्रक्रियाएँ सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली फरवरी, 2020
12. अस्थाना विपिन, शिक्षा मनोविज्ञान पुस्तक मंदिर आगरा, 2007

❖◆❖